Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

हमारा हीरो - अजीत अंजुम : मैनेजिंग एडीटर , न्यूज 24

"हां , मैं थोड़ा एरोगेंट , शार्ट टेंपर्ड हूं असलियत सिर्फ वही नहीं जो सामने है : सरकार तो चाह रही कि सारे चैनल दूरदर्शन बन जाएं :
लोकसभा टीवी पर देश की सबसे ज्यादा चिंता की जाती है पर उसे कितने लोग देखते हैं :
मैं मैनेजर नहीं , प्रोड्यूसर हूं :
दिमाग में टीआरपी, दिल में देश और समाज है :
"

-शुरुआत बचपन से करिए। जन्म , शिक्षा और पत्रकारिता में आने के सपने के बारे में बताएं।

-बिहार के बेगूसराय शहर में 8 अप्रैल 1966 को पैदा हुआ। सात साल की उम्र से ही बिहार के विभिन्न शहरों में टहलता रहा। वजह, पिता जी जूडीशियरी अफसर रहे, जिनका तबादला कभी हजारीबाग, कभी छतरा, कभी दरभंगा, कभी मुजफ्फरपुर होता रहा और उनके साथ हम लोग भी घूमते रहे। मुजफ्फरपुर के ल स कालेज में ग्रेजुएशन करने के दौरान ही पत्रकारिता की तरफ रुझान हुआ। तब लेटर टू एडीटर लिखने लगा था। जब छपने लगा तो लिखने की आदत ऐसी पड़ी कि फिर पढ़ाई में मन नहीं लगा। पटना के **पाटलीपुत्र टाइम्स** में छपने लगा था। मुजफ्फरपुर के मीनापुर कस्बे का मैं संवाददाता बन गया और मुजफ्फरपुर में बैठकर खबरें मीनापुर डेटलाइन से लिखा करता था। बीए फर्स्ट इयर में ही पत्रकारिता का यह नशा चढ़ चुका था। किसने क्या लिखा, किसका क्या छपा ...देखने के लिए हर रोज सुबह-सुबह हम लोग कल्याणी चौक इकट्ठा होते थे। उन दिनों पटना में नभाटा के संपादक **दीनानाथ मिश्र** थे। तब कैंपस रिपोर्टर रखने की शुरुआत हुई। मुजफ्फरपुर के ल स कालेज का कैंपस रिपोर्टर मुझे बनाया गया। 1984 से 87 तक ग्रेजुएशन करने के बाद 1987 में

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

पत्रकारिता में बहुत कुछ करने का सपना लिए ड्रीम सिटी पटना पहुंचा।

-क्या आपका शुरू से नाम अजीत अंजुम था या अंजुम शब्द बाद में जुड़ा।

-आज जो नाम है वह छठवीं बार के बदलाव से पैदा हुआ। सबसे पहले नाम था **अजीत कुमार सिंह।** फिर **अजीत कुमार। अजीत कुमार अभिषेक** । **अजीत कुमार अकेला** । अ**जीत कुमार अंजुम** । इसमें से कुमार इसलिए हटाना पड़ा क्योंकि बाइलाइन के वक्त नाम बड़ा होने की शिकायत एक वरिष्ठ पत्रकार साथी ने कर दी। छठीं बार जो नाम रखा वही स्थायी हुआ। मेरे नाम बदलने से घर वाले काफी नाराज होते थे। लेकिन मुझे जो करना था वो मैंने किया।

-जब आप सन 87 में अपने सपनों के शहर पटना संघर्ष करने पहुंचे तो वहां क्या रिस्पांस मिला ?

-पटना में जितने बड़े नाम हुआ करते थे, उन जैसा बनने का ख्वाब लिए पटना पहुंचा। उन दिनों के जो बड़े नाम थे, जिनसे मैं प्रभावित रहता था, वो हैं- **अरुण रंजन , विकास कुमार झा , सुरेंद्र किशोर , जयशंकर गुप्त , उर्मिलेश , वेद प्रकाश वाजपेयी , हेमंत , श्रीकांत , सुरेंद्र किशोर** । ये लोग जैसा लिखते थे, सिस्टम के खिलाफ अपनी लेखनी से बिगुल बजाया करते थे, वो काफी प्रभावित करता था मुझे। ये एग्रेसिव जर्नलिज्म का दौर था, उसके जो हीरो थे, उसी जैसा बनने पटना आया। दिल्ली जाने की बात तब मेरी सोच में नहीं थी। ड्रीम सिटी पटना का हिस्सा बनने के बाद पता चला कि हकीकत ज्यादा चट्टानी है। अपने जैसे संघर्षशील लोगों की पटना में संगत बनने लगी। इसमें अभि मनोज, विकास मिश्रा, रवि प्रकाश, हरि वर्मा, विकास रंजन आदि थे। हम सभी स्थापित पत्रकारों के समानांतर खड़े होने की कोशिश करने लगे। होटल पिंटू के बाहर पत्रकारों - संपादकों की जुटान होती थी तो हम लोगों ने अड्डा हुंकार प्रेस के बाहर चाय की दुकान पर जमाया। यहीं सभी लोग चंदा कर शराब और अंडा मंगाते थे। मैं शराब पीता नहीं, इसलिए अपना हिस्सा ज्यादा अंडे खाकर पूरा करता था। इस जुटान से हम लोगों में अजनबीपन और अकेलापन खत्म हुआ। आत्मविश्वास बढ़ा। पटना कुल दो साल रहा। 87 से 89 तक। समझ में आया कि जितनी भी अखबार-मैग्जीनें हैं, **धर्मयुग** , **दिनमान**

,
रविवार

,
जनसत्ता

, उनका मुख्यालय दिल्ली-मुंबई है। पटना में सिर्फ फ्रीलांसिंग संभव है। इसमें भी तगड़ा कंपटीशन। बिहार में नरसंहार बहुत हआ करते थे। इसकी कवरेज पहले भेजने की होड़ होती थी। एक नरसंहार पर खबरों के कई पैकेट मैगजीनों के मुख्यालय कुरियर से भेजते थे। जिनका पहले पहुंचता, उनका छपता था। मशहूर फोटोग्राफर कृष्ण मुरारी किशन के भाई और प्रतिभावान फोटोग्राफर कृष्ण मोहन शर्मा के स्कूटर पर बैठकर नरसंहार स्थल जाता था। इतना पैसा कहां था कि खुद जा पाते। वहां से रिपोर्ट तैयार कर लाते और कुरियर से फटाफट भेज देता। तीन बड़ी मैगजीनों में लिखने वाले हम 13 लोग थे। जिस दिन मैगजीन के पटना में आना होता था, उस दिन बेचैन रहते थे। दिनमान में एक रिपोर्ट मेरी प्रकाशित हुई,
बेगूसराय से अजीत अंजुम

नाम से। तस्वीर के साथ। ऐसे कुल तीन चार लेख छपे। एक अखबार
जनशक्ति

नाम का छपता था पटना से। अखबार का कैचलाइन था-
वामपंथी चेतना का अग्रदूत

। सोच में एग्रेसिव अखबार था। इसके लिए पटना के गांधी मैदान के पास स्लम पर स्टोरी की। 25-30 पेज का लेख लिखा। लेख इस अखबार के रविवासरीय में छपा। फुल पेज का शेष पेज अंदर था। कुल डेढ़ पेज। फोटो भी खुद खींचे थे। संपादक को पसंद आया तो उन्होंने हर रविवार लिखने को कह दिया। इसके 50 रुपये मिलते थे। उन्हीं दिनों
आज

अखबार में कुछ लोगों की बहाली होने की सूचना मिली। ट्राई करने मैं भी पहुंचा। वहां पहुंचा तो जिन्होंने इंटरव्यू लिया उन्होंने केवल तीन सवाल पूछे- जाति क्या है, नाम क्या है, जिला कौन सा है। मेरा सेलेक्शन नहीं हुआ। दूसरे साथी को उन्होंने रख लिया। शायद उसकी जाति उन्हें सूट कर गई। बताया गया कि उन्हें भूमिहारों से चिढ़ है। मैं सोचता रहा कि उन्हें किसी एक भूमिहार से दिक्कत हुई तो सबको दुश्मन क्यों मान लिया? घर से मेरे पर प्रेशर पड़ने लगा। बैंक में क्लर्क बन जाओ, पीओ बन जाओ पर ये पत्रकारिता छोड़ो। पत्रकारों की जो इमेज मेरे परिवार में थी वो वही थी जो उन दिनों जिले के पत्रकारों की स्थिति थी। सीमेंट, कोयला, राशन का परमिट लेकर बेचते थे और इसी से पैसा कमाते थे। पत्रकारिता से तो उन्हें कुछ मिलता नहीं था। पिता जी मेरे सपोर्ट में थे। वे मुझे अपने हिसाब से करने की छूट देते थे। घर से पैसे वगैरह भी मिल जाते थे। दो साल में पटना में रहने के बाद लगा कि यहां कुछ खास नहीं होने वाला है। उन्हीं दिनों गुवाहाटी से उत्तरकाल नामक एक अखबार निकलने की तैयारी हो रही थी जिसके लिए पत्रकारों का चयन पटना में किया जा रहा था। इसके लिए हम सात लोग चुने गए। 900 रुपये में नौकरी मिली। गुवाहाटी पहुंच गए। रहने के लिए फ्लैट भी अखबार ने दे दिया। अखबार के संपादक
चंद्रेश्वर

हुआ करते थे। हम जो सात लोग वहां गए उनमें
ओम प्रकाश अश्क

,
रत्नेश कुमार

आदि थे। हम सब एक ही फ्लैट में रहते थे। अखबार का मालिक सीमेंट कारोबारी था और उसका बर्ताव घटिया किस्म का था। वहां पता चला कि हम लोगों को अखबार के लिए विज्ञापन भी लाना पड़ेगा। डेढ़ महीने बाद ही मैंने नौकरी न करने का ऐलान कर दिया। उधर, जब हम लोग पटना से गुवाहाटी चलने को हुए थे तो मेरे घर पर पूजा पाठ कर आवारा बेटे के लायक बनने की घोषणा कर दी गई और इधर नौकरी छोड़कर फिर पहले वाली स्थिति में पहुंच गया था। दरअसल मैं थोड़ा रिएक्शनरी किस्म का हूं। गुवाहाटी में उम्र में तो सबसे छोटा था पर सब

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

ajitanjum@bagnetwork.in